॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ शम्भुशतक ॥

जिसमें

प्रणतपाल, दीनदयाल, श्रीशम्भु भगवान् के कृपानु वाद सम्बन्धी ध्रुपद, भजन, देश की ठुमरी, [illegible] [illegible] मिश्रित [illegible], मजेदार होलिया, चैती, घाटो, मलार, कजरी, श्यामकल्याण, सोरठ, बिहाग, परज, भैरवी, काफिये मिश्रित मनमोहनी लहरे, लावनी गजल, दादरा, स्तुति, आरती आदि कई चाल के उत्त-मोत्तम, १२५ पद [illegible] के कीर्तन करने योग्य धुनों के लक्षण संयुक्त लिखे है ।

जिसे

[illegible] परगना [illegible] जि [illegible] निवासी चौ० बलदेवप्रसाद सिंह कुर्मी [illegible] ने अतीव परिश्रम से रचना किया ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में बाबू श्रीकृष्ण वर्म्मा द्वारा मुद्रित ।

सन् १९११ ई० ।

प्रथम बार १०००]   [मूल्य ।)